रामचरित मानस में शासन तन्त्र

डॉ0 मंजू कुमारी*

श्रेष्ठ रचना अपने युग के लिए तो प्रांसगिक होती ही है, साथ ही प्रत्येक युग के लिए भी प्रांसगिक होती है। इस दृष्टि में रामचरित मानस पर विचार करना उपयोगी है। तुलसी की विचारधारा पौराणिक थी और वह युग पौराणिक युग का था। जिसमें दार्शनिक विचारधारा के मुख्य स्रोत थे। उनका यह प्रयास युगान्तकारी था। जिससे जनमानस में आत्मविश्वास, अस्मिता, गौरव, आत्माभिमान, मनोबल एवं जागरण की तरंगो ने आन्दोलन किया। महाकवि तुलसीदास भविष्य द्रष्टा भी थे, उन्होंने न सिर्फ 'रामचरित मानस' में राजनीति दर्शन के मतों पर सार प्रस्तुत किया, जो पूर्ववर्ती थे, बल्कि उन सिद्धान्तो का भी निरूपण किया।

मानस में वर्णित शासन तन्त्र पर विचार करने से ज्ञात होता है कि तुलसी राम के शासन तन्त्र के समर्थक और रावण के शासनतन्त्र के विरोधी हैं। उन्होंने तत्कालीन मुगल प्रशासन तन्त्र को कलियुग वर्णन के रूप में मानस के 'उतरकाण्ड' में प्रस्तुत किया। वे अपने युग के राजाओं के शासन तन्त्र को केवल पण्डप्रधान, प्रज्ञाशोषण, धर्म विहिन, लोक चेतना से रहित पाप परायण, नीति विहीन, स्वेच्छाचारी, अनाचारी, अयोग्य भयग्रस्त, प्रजापालन व रंजन से दूर तथा एंकाकी नीति से परिचालित कहा है–

''नृप पाप परायन धर्म नहीं, करि दराड विडम्ब प्रजा नितहीं।
सब नृप मय जोग उपहासी, जैसे बिनु बिराग सन्यासी
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन, कोउ नहीं मान निगम अनुसासन। ''

रावण के राज्य में हम एक ऐसा निरकुंश सम्राट पाते हैं जो ब्राह्मण होते हुए भी आर्य संस्कृति का विरोधी है। वह साम, दाम की नीति को न अपनाकर दण्ड की नीति अपनाता है। उसके शासन तन्त्र में व्यक्ति इच्छा ही शासन का मूलमंत्र है, वहीं राम में लोकमंगल की साधना। जहाँ एक ओर रावण शासन सांमतीय संस्कारो से युक्त है, वहाँ दूसरी ओर राम लोकधर्म की चेतना से संपृक्त। रावण के शासन में निरंकुशता है तो राम में लोक मर्यादा। रावण का शासन प्रतिशोध, हिंसा, स्वार्थ से ग्रसित है तो राम का शासन धर्म, न्याय, प्रेम, परमार्थ–पथ का अनुगामी। रावण का शासन भय पर आधारित था तो राम का प्रेमपूर्ण शीलोत्कर्ष पर। शासन तंत्र का चरम मूल्य एक सर्वकल्याणकारी आदर्श राज्य की संरचना है। जिसे उन्होंने रामराज्य के रूप में स्थापित किया, जो राजतन्त्र द्वारा स्थापित होकर भी लोकतन्त्र के सारे मुल्यों को अपनाए हुए है। रामराज्य के शासन रूप में उन्होंने सर्वोत्तम आदर्श शासन तंत्र की कल्पना की है।

पी0डी0एफ0 हिन्दी विभाग का0हि0वि0वि, वाराणसी

संत होने के नाते तुलसी को राजतंत्र, राज दरबार तथा राज्य–सभाओं का निजी प्रत्यक्ष अनुभव नहीं था। इसलिए उनके शासनतंत्र में यथार्थता के स्थान पर राजनीतिक सिद्धान्तों के निरपेक्ष आदर्श–मूल्यों का ही यशोगान अधिक किया है साथ ही उन्होंने अपने समस्त विवेचन वर्णाश्रम व्यवस्था को ही आधार बनाकर किया है। उनके शासनतन्त्र में सम्राट–सत्ता तथा लोकमत की सत्ता के नये सम्बन्ध मिलते हैं। राम राज्य के शासनतन्त्र की दण्ड और भेद शासननीति के दो अंग हैं। राज्यशासन के आदर्शों, भौतिक समृद्धि, सुख–साम्य और सम्पत्ति को ही नहीं आध्यात्मिक सुख शान्ति को भी चरम मुल्य माना गया है।

''दण्ड अतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहिं सुनिल अस राम चन्द के राज।। ''

शासनतन्त्र का आध्यात्मिकरण तुलसी की मौलिक देन है, शायद इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति तुलसी के राम में राम को देख लेता है और रामराज्य में स्वराज्य का ही नहीं सुराज का दर्शन कर लेता है। राम को आदर्श राजा के रूप में चित्रित कर उन्हें राजधर्म एवं राजनीति का परिपालन करते हुए मानस में दर्शाया है।

''सचिव वैद गुर तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइहिं बेगहीं नास।।''

राम एक आदर्श राजा हैं। यद्यपि तुलसी के राम को ब्रह्म और जगदीश्वर माना है, लेकिन मनुष्य रूप में उनके सारे कार्य समाज के कार्य बना दिये हैं। मनुष्य रूप में वे एक राष्ट्रीय आर्य जन नेता हैं जो अपनी व्यक्तिगत इच्छा और सामाजिक इच्छा को एक तान कर देते हैं। ''राम लोकमत और लोकमन के प्रतीक हो गये हैं। इस भाँति वे ब्रह्म, सम्राट, लोकमत तीनों के प्रतीक हैं। राजनीति के स्तर पर वे निर्णायक लोकमत हैं। ''

इस प्रकार से रावण का शासन अधर्म का प्रतीक है। राम का युद्ध धर्म की रक्षा तथा सत्य की विजय और रावण का युद्ध अधर्म तथा असत्य का प्रतीक है, उसका पराजय का है। राजनीतिक निष्कर्षों की दृष्टि से रामचरितमानस का शासन तन्त्र का चरम मूल्य एक सर्वकल्याणकारी आदर्श राज्य की संरचना है। जिसे तुलसी दास ने रामराज्य के रूप में स्थापित किया जो राजतंत्र द्वारा स्थापित होकर भी लोकतंत्र के सारे मूल्यों को अपनाये हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 रामचरित मानस, पृ0 6/101/6
2 रामचरित मानस, पृ0 6/98/2
3 रामचरित मानस : 6/22/10
4 रामचरित मानस 5/37
5 डॉ0 रमेश कुतल मेघ, तुलसी, आधुनिक वातायन से, पृ0 95